प्राचीन भारत में सिक्के के उत्पत्ति एवं विकास

Origin and Antiquity of Coins in Ancient India

मनुष्य की विकसित अवस्था के सन्दर्भ में मुद्रा एक मानक बनकर हमारे सामने आया। यह विनिमय का एक माध्यम है। इसका आविष्कार मनुष्य के विकसित और परिष्कृत विचार का प्रतीक है। जिससे वह उन वस्तुओं को प्राप्त करता है जिसकी उसे आवश्यकता पड़ती है।

वासुदेव उपाध्याय के अनुसार — सोने को मूल्यवान समझकर लोग कोई अन्य सस्ती वस्तु देने लगे जिससे सस्ती वस्तु खरीदी जा सके। इसी तरह चाँदी एवं ताम्बे के सिक्के का प्रयोग हुआ।

पी० एल० गुप्त के शब्दों में — "कालान्तर में कुछ वस्तुओं को अधिक महत्व दिया जाने लगा और उनका मूल्य ऊँचा आँका गया। इस प्रकार उन वस्तुओं को विनिमय का माध्यम बना लिया गया, जिसका एक मानक स्वरूप तैयार कर लिया गया। इस प्रकार ईकाई मूल्य की धारणा समाज में फैल गई। जिससे सर्वप्रथम मुद्रा का विकास हुआ।

मुद्रा की प्राचीनता एवं उद्भव

भारत में मुद्रा की प्राचीनता के दो सिद्धान्त हैं —

1. स्वदेशी उत्पत्ति का सिद्धान्त
2. विदेशी उत्पत्ति का सिद्धान्त

1. स्वदेशी उत्पत्ति का सिद्धान्त :—

जिस समय मुद्रा के रूप में भारत में धातु का प्रयोग हुआ उस समय इसको एक पिण्ड मानकर ही आदान-प्रदान का साधन बनाया गया। वैदिक साहित्य में स्वर्ण चूर्ण और हिरण्यपिण्ड का उल्लेख मिलता है। परीक्षण और तौल में अधिक समय लगता था। अतः स्वर्ण या रजत पट्टियों में काटकर उसका एक मानक मूल्य निर्धारित किया गया। वैदिक साहित्य में शतमान या निष्क नाम से इन्हीं सिक्कों का उल्लेख किया गया है।

स्रोत, सूत्र, पाणिनी की अष्टाध्यायी,

कात्यायन अथवा वार्तिक, शतपथ ब्राह्मण, तैत्तरीय ब्राह्मण, वाजसनेयी संहिता आदि ग्रंथों में इस सम्बन्ध में काफी उल्लेख प्राप्त होता है।

विल्सन और प्रिंसेप का मत है कि भारत में सिक्कों का प्रचलन यूनानी आक्रमण के बाद में हुआ। लेकिन ~~प्रिंसेप~~ प्रिंसेप ने अपने मत में परिवर्तन किया और यह मान लिया कि भारतीय सिक्के स्वदेशीय है तथा उनका निर्माण स्वदेशी था।

स्मिथ का मत है कि भारतीय सिक्के स्वदेशी सिक्कों के अनुकरण पर है।

२. → विदेशी उत्पत्ति का सिद्धान्त :-

विदेशियों को भारतीय सिक्कों का ज्ञान सिकन्दर के आक्रमण के बाद हुआ। इसलिए विदेशी भारत की हर चीज पर यूनान का ही प्रभाव देखते है। डा० वासुदेव उपाध्याय का कहना है कि भारत में धातु पिण्ड के अतिरिक्त आहत सिक्के भी प्रचलित थे। जिनका परिज्ञान विदेशियों को न था। यह भी विचारणीय है कि गुप्तलोगों ने पिछले कुषाणों का अनुकरण किया तथा स्वर्ण मुद्राओं पर कुषाणों का वस्त्र तथा माप-तौल को अपनाया। किन्तु इस बात को निश्चित नहीं कह सकते कि यूनानी सिक्कों तथा आहत ~~सिक्कों~~ मुद्रा में समानता है। यदि भारतवासी यूनानी सिक्कों को रखते देखते तथा उनकी प्रेरणा में पड़े रहते कि मुद्रा कला का प्रारम्भ किया जाय तो ठप्पे की प्रणाली को छोड़कर जिस रीति से यूनानी सिक्के तैयार किए जाते थे। आहत रीति अथवा साँचे में ढालने की प्रणाली को कार्यान्वित न करते।

अतः प्राचीन सिक्के जिन्हें कार्षापण कहते है यूनानियों की नकल करके तैयार नहीं किए गए थे। डा० वासुदेव उपाध्याय ने दोनों प्रकार के सिक्कों का तुलनात्मक अध्ययन किया है।

कनिंघम ने लिखा है कि सिकन्दर के आक्रमण के पूर्व भारत में सिक्के प्रचलित थे। तक्षशिला के राजा ने यूनानी आक्रमणकारी सिकन्दर को 200 आहत सिक्के उपहार स्वरूप में प्रदान किया था। पुरातत्व ने

स्पष्ट कर दिया है कि भीर नामक स्थल से उत्खनन से प्राप्त सिक्के कार्षापण प्रकार के आते हैं।

विदेशी विद्वानों ने भारतीय सिक्के कार्षापण पर ईरानी प्रभाव को दिखाने का प्रयास की है। सिग्लास ईरानी सिक्के को कहते हैं।

डा० वासुदेव उपाध्याय ने लिखा है कि यदि ऐसी घटना की सच्चाई पर विचार कर तो सिग्लास के लगभग चिन्हों सहित कार्षापण का प्रचलन का कोई अर्थ नहीं निकलता। अतएव ईरानी प्रभाव की बात सारहीन हो जाती है। कार्षापण भारतीय सिक्के थे जिसकी तौल 32 रत्ती थी। यह सम्भव है कि तक्षशिला से प्राप्त कड़ानुमा सिक्के सिग्लास के दोगुने तौल के बराबर हैं। तौल तथा चिन्हों के आधार पर तथा आकार को देखते हुए भारतीय कार्षापण तथा ईरानी सिग्लास में कोई भी समानता दिखाई नहीं देती है। अतः इसके अनुकरण का कोई प्रश्न सामने नहीं आता।

प्राचीन भारत में मुद्रा का विकास

मुद्रा की प्राचीनता :— विदेशी विद्वानों की धारणा यही रही है कि सिकन्दर के आक्रमण के बाद भारत में सिक्कों का प्रचलन हुआ। किन्तु उत्खनन से जब कार्षापण सिक्कों का पता चला तो विदेशी-नकल की यह धारणा निर्मूल हो गई। सत्य यह है कि भारत में अति-प्राचीन काल से ही सिक्कों का प्रचलन हो गया था। अतः मुद्रा निर्माण के इतिहास को निम्नलिखित युगों में विभाजित करके उन पर विस्तार से स्पष्ट हो जाएगी।

मुद्रा निर्माण के इतिहास का युग निम्न है:-

1. सैन्धव सभ्यता के युग में मुद्रा
2. पूर्व-वैदिक युग में मुद्रा
3. वैदिकोत्तर युग में मुद्रा
4. 800 ई० पू० से 300 ई० पू० में साहित्य युग।

1. सैन्धव सभ्यता के युग में मुद्रा → सैन्धव सभ्यता के युग में पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े मिले हैं जिन्हें मोहरें कहा जाता था। इनकी तौल 1 ग्रेन की है। कुछ पाषाण के टुकड़े का वजन 52 ग्राम की है। कुछ धातु के ऐसे टुकड़े मिले हैं जिन्हें मुद्रा भी कहा जा सकता है।

Scanned with CamScanner

इन धातु खण्डों पर किसी प्रकार का लेख नहीं है।

2. वैदिक युग में मुद्रा — भण्डारकर का कहना है कि ब्राह्मण ग्रन्थों और वैदिक साहित्य में निष्क, कृष्णल, सुवर्ण, शतमान तथा निष्क शब्दों के विवेचन से ऐसा प्रतीत होता है कि वैदिक काल में आर्य लोग मुद्रा की निर्माण कला से परिचित थे।

3. वैदिकोत्तर साहित्य में मुद्रा — ब्राह्मण और उपनिषद में ताम्र मुद्राओं के उल्लेख नहीं मिलते हैं। निष्क का उल्लेख आवश्य है। पंचविंश ब्राह्मण में उल्लेख देखा जा सकता है। निष्क आभूषण थे। ब्राह्मण तथा उपनिषद में स्वर्ण का उल्लेख ~~देखा जा सकता है~~ मिलता है। इससे ज्ञात होता है कि "निष्क" एक स्वर्ण खण्ड था। इसका प्रयोग उपहार के रूप में करते थे। स्वर्ण-मुद्रा के रूप में इसका प्रयोग होता था। इसकी तौल सर्वमान्य थी।

ब्राह्मण और संहिताओं में स्वर्ण खण्डों का उल्लेख हुआ है। ये स्वर्ण खण्ड 'शतमान' थे। यह स्वर्ण धूल 'हिरण्य' से निर्मित होता था। इस शतमान की ~~एक~~ तौल 108 रत्ती था।

"शतमान" वृत्ताकार होता था। राज्याभिषेक और राजसूय यज्ञ के अवसर पर इसका प्रयोग करते थे।

4. — 800 ई० पू० से 300 ई० पू० के साहित्य में मुद्रा :→ इसकी जानकारी के लिए मुख्य ग्रन्थ हैं :- (1) पाणिनी की अष्टाध्यायी (2) सुत्त-पिटक, जातक (3) विनय पिटक

स्वर्ण मुद्रा इस काल तक एक सर्वमान्य बात थी। मुद्रा की प्रमाणिकता भी सिद्ध थी। निष्क एक मुख्य मुद्रा मुद्रा थी। शतमान का प्रयोग उपहार तथा विनिमय के लिए होता था। रजत शतमान भी प्रचलन में थे। इसकी तौल 77 ग्रेन थी। स्वर्ण कार्षापण का उल्लेख नहीं मिलता। शतमान और कार्षापण ये दो रजत-मुद्रायें थीं।

कार्षापण पालि में कहापण अथवा रूपों में दूसरी शताब्दी ई० पू० प्रचलित रहा। रजत तथा ताम्र मुद्राओं का प्रचलन का आगमन 600 शताब्दी ई० पू० के लगभग हुआ। तक्षशिला से प्राप्त सिक्के इसकी पुष्टि करते हैं।

Scanned with CamScanner